ऐ वतन...तेरे खिलाफ साजिश हो रही है

-वाई. के. रज्जन

देश की सेंट्रल यूनिवर्सिटीज को लेकर केंद्र सरकार के इरादे ठीक नहीं लग रहे हैं। जेएनयू, एएमयू, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी, बीएचयू, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, आईआईटी, दिल्ली यूनिवर्सिटी, जादवपुर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, एफटीआईआई में इन दिनों चल रहे स्टूडेंट्स आंदोलन पर अगर आप नजर डालें तो सरकार ने सभी यूनिवर्सिटीज में स्टूडेंट्स को उलझा रखा है। बच्चे पढ़ाई छोड़कर अपन फेलोशिप, यूनिवर्सिटी की साख, बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। कहीं पर यूनिवर्सिटी का दर्जा छीना जा रहा है तो उसकी लड़ाई लड़ी जा रही है। किसी यूनिवर्सिटी को इसलिए निशाना बनाया जा रहा है कि वहां के प्रशासन ने देश की मानव संसाधन विकास मंत्री मनुस्मृति इरानी के फर्जी सर्टिफिकेट केस में मदद से मना कर दिया।

देश के जाने-माने पत्रकार पी. साईनाथ का कहना है कि यह सब जानबूझकर प्राइवेट यूनिवर्सिटीज के धंधेबाजों का धंधा जमाने के लिए किया जा रहा है। सरकार की कोशिश है कि तमाम सेंट्रल यूनिवर्सिटी में इतनी अव्यवस्था फैल जाए कि या तो वहां पढ़ाई ठप्प हो जाए या फिर वहां ताले लग जाएं। ताकि स्टूडेंट्स प्राइवेट यूनिवर्सिटीज की तरफ ज्यादा से ज्यादा भागें। देश की प्राइवेट सेक्टर की कंपनियां भी अपने लिए मैनपावर सेंट्रल यूनिवर्सिटीज से सबसे ज्यादा उठाती हैं इसलिए भी प्राइवेट यूनिवर्सिटीज परेशान हैं कि कंपनियां उनके कैंपस में आती नहीं हैं इसलिए बच्चे भी कम तादाद में प्राइवेट यूनिवर्सिटीज में दाखिला लेते हैं। इसके अलावा तमाम ऐसे केंद्रीय शिक्षण संस्थान हैं जो यूनिवर्सिटी न होकर अपनेआप में स्वतंत्र रूप में काम कर रहे हैं। सरकार इनका भी रुतबा छीनना चाह रही है। इनमें आईआईएम जैसे संस्थान आते हैं।

जेएनयू के बवाल से पहले हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी (एचसीयू) में बवाल शुरू हुआ था, जहां दलित छात्र रोहित वेमुला को सरकार की नीतियों की वजह से खुदकुशी करनी पड़ी। हालांकि जेएनयू के स्टूडेंट्स की यूनियन दिल्ली में अकुपाई यूजीसी (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) आंदोलन इसीलिए चला रही थी कि स्टूडेंट्स की उस फेलोशिप को फिर से शुरू कराया जाए जिसे बीजेपी सरकार आते ही मनुस्मृति इरानी ने बंद करा दिया था। रोहित वेमुला और उसके साथी इसी मांग को लेकर हैदराबाद में एचसीयू गेट पर बैठे हुए थे लेकिन सरकार के चमचे वीसी अप्पाराव ने बंडारू दत्तात्रेय और मनुस्मृति इरानी ने इतना परेशान किया कि रोहित ने अपनी जान दे दी। इस खबर के फैलते ही और तो कहीं नहीं लेकिन जेएनयू के स्टूडेंट्स का गुस्सा फूट पड़ा। उसी दौरान अफजल गुरु की बरसी पर जेएनयू में कश्मीरी स्टूडेंट्स ने एक आयोजन कर डाला। बीजेपी के जेबी छात्र संगठन एबीवीपी को इस आयोजन का पता पहले से था कि यह हर साल होता है। उसने मनुस्मृति इरानी की मदद लेकर साजिश रची और जेएनयू रणक्षेत्र में तब्दील हो गया।...लेकिन कुछ चीजें अच्छाई के लिए भी होती हैं। जेएनयू में सरकार फंस गई। वहां कन्हैया पैदा हुआ और उसने जन सरोकार के मुद्दों के साथ मोदी और उसके गिरोह को ललकारा। लेकिन गिरोह के लोग कन्हैया और उसके साथियों को दबाने में जुट गए। लेकिन ऐसा नहीं हो सका। आज देश की विपक्षी पार्टियों की बजाय यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स और उनकी यूनियन मोदी और उसके मंत्रियों को ललकार रही हैं। ऐसा लगता है कि स्टूडेंट्स ही असली विपक्ष हैं। कन्हैया एजेंडा सेट कर रहा है और केंद्र सरकार और विपक्षी राजनीतिक दलों को उसी एजेंडे के इर्द-गिर्द अपनी बात करनी पड़ रही है।

दिल्ली हाई कोर्ट के रिटायर्ड चीफ जस्टिस ए. पी. शाह अभी एक हफ्ता पहले जेएनयू में राष्ट्रवाद पर स्टूडेंट्स को संबोधित करने पहुंचे, वहां उन्होंने जो सवाल उठाए, उसका जवाब अभी तक सुप्रीम कोर्ट भी नहीं दे सका है। जस्टिस शाह ने अपनी बात शुरू करने से पहले जो जानकारी दी, वो चौंकाने वाली थी।...जस्टिस शाह ने कहा, मेरे दादा जी अखिल भारतीय हिंदू महासभा के अध्यक्ष थे। मैं कुछ दिन तक शाखा में भी गया। मैंने ग्रैजुएशन में सावरकर को पढ़ा लेकिन मैं उनके अखंड भारत हिंदू राष्ट्र के विचार से सहमत नहीं था। यह मेरी सोच थी। क्योंकि इस तरह से अलग सोचने का अधिकार मेरे पास था। मुझ पर जबरन कुछ भी थोपा नहीं जा सकता। मैं देश के प्रधानमंत्री से और इस देश से बहुत प्यार करता हूं। शायद सब लोग करते होंगे। लेकिन जो मेरी सोच है, वो मेरी अपनी है। हर किसी को अपनी तरह सोचने का अधिकार है।

जस्टिस शाह ने कहा कि जेएनयू के खिलाफ जो अभियान चलाया गया, मैं उससे बहुत आहत हूं। लेकिन मैं सबसे ज्यादा आहत उस घटना से हुआ, जो पटियाला हाउस कोर्ट में हुई। जहां स्टूडेंट लीडर कन्हैया कुमार, बाकी स्टूडेंट्स, टीचर्स और पत्रकारों को पीटा गया। मैं पूछता हूं कि सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट ने उन वकीलों के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं कि जिन्होंने यह घिनौनी हरकत की। आखिर कानून कहां गया। जस्टिस शाह के इस बयान के बाद मुझे उम्मीद थी कि अगले दिन सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट इसका जवाब देगा लेकिन आज तक कोई जवाब नहीं आया।

हैरानी की बात है कि भारत की जय बोलने वाले और इसके लिए कानून बनाने की मांग करने वाले बीजेपी समर्थक बुद्धिजीवी जस्टिस ए. पी. शाह या पत्रकार पी. साईनाथ के मूल सवालों का जवाब देने की बजाय भारत माता की जय बोलने लगते हैं। अंबानी, अडानी या लखानी की कंपनी में काम करने वाले मजदूर का असली सरोकार क्या होना चाहिए, पहले अपनी मजदूरी की पूरी मांग या फिर भारत माता की जय...आप लोग तय करें। दरअसल, यह जयजयकार भी एक बड़ी साजिश का हिस्सा है। सांप्रदायिकता की बदबू तो इससे आ ही रही है साथ ही अगर देश का मजदूर-किसान-दलित-अल्पसंख्यक सिर्फ भारत माता की जय करेगा तो वह कभी भी अंबानी, अडानी या लखानी से अपनी पूरी मजदूरी नहीं मांग सकेगा।...जागो भारत....जागो...भारत माता की जयजयकार से कुछ नहीं होगा...उठो और अपना हिस्सा मांगो।

फासीवाद की चुनौती - विकल्पहीनता का संकट

नरेंद्र मोदी (आरएसएस) के सत्ता में आने के साथ देश पर फासीवाद का खतरा बढ़ गया है। मोदी सरकार की नीतियों से पूरे देश में अराजक स्थितियां बनती चली जा रही हैं। सरकार ऐसे-ऐसे मुद्दे को सामने ला रही है, जिनका जनता की समस्याओं से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन इन मुद्दों के माध्यम से सरकार अपनी नाकामी छुपाने की कोशिश करना चाहती है। कभी राष्ट्रवाद का मुद्दा उठाया जाता है तो कभी भारत माता की जय का। राम जादे और हरामजादक का। खास बात ये है कि सरकार और आरएसएस के लोग एक साथ ही कही तरह की बातें बोलते हैं, ताकि जनता गुमराह रहे। ये छल-छद्म की राजनीति कर रहे हैं, जिसमें इन्हें महारत हासिल है। दो साल होने को आए, मोदी सरकार ने एक भी वादा पूरा नहीं किया है। जनता के सामने जो सबसे बड़ी समस्याएं है, उनके निदान के प्रति मोदी सरकार पूरी तरह उदासीन है। दूसरी तरफ, यह सरकार ऐसे मुद्दों के हवा दे रही है, जिनमें इसके विरोधी ये खूद ही फंस जा रहे हैं। उदाहरण के लिए आंध्र प्रदेश सेंट्रल यूनिवर्सिटी के शोध-छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या के बाद खड़ा हुआ आंदोलन और जेएनयू में वहां छात्र संघ के अध्यक्ष एवं अन्य छात्र नेताओं की गिरफ्तारी से जुड़ा प्रकरण।

जिस तरह ये आंदोलन चला, उससे सरकार का क्या बिगड़ना था, पूरा आंदोलन ही दिशाहीन हो गया। कन्हैया को एक तरह से कांग्रेस और लेफ्ट के नायक के रूप में पेश किया गया। शशि थरूर जैसे कांग्रेसी नेता ने जेएनयू जाकर कन्हैया को आज का भगत सिंह घोषित किया। इसे हास्यास्पद ही कहा जा सकता है। ऐसी भी खबरें आईं कि असम चुनाव, बंगाल चुनाव जो अभी होने वाले हैं, उनमें कन्हैया का इस्तेमाल किया जाएगा। जेएनयू आंदोलन से निकला कन्हैया जाकर राहुल गांधी से भी मिल आया। पूरा लेफ्ट कन्हैया के पीछे एकजुट हो गया, यानी नेताओं का अकाल कांग्रेस ही नहीं, लेफ्ट के पास भी है। उसे और कांग्रेस को एक 'भगत सिंह' मिल गया। जाहिर है, जब हालत ऐसी हो तो मोदी जी और संघ की सत्ता का मुकाबला कर पाना न कांग्रेस के लिए संभव है और न ही लेफ्ट पार्टियों के लिए।

ये अलग बात है कि हर मोर्चे पर असफल होने के कारण मोदी सरकार के खिलाफ जो जन असंतोष उभर रहा है, वह अगले तीन वर्षों में इतना बढ़ जाएगा कि चुनावों में भाजपा को जमानत बचानी भारी हो जायेगी। अभी तो जिन राज्यों में विधानसभा के चुनाव होने हैं, उनमें मोदी सरकार

के पसीने छूट सकते हैं, पर सवाल ये है कि जब मजबूत विपक्ष ही नहीं है तो आम जनता के सामने स्थिति सांप-छछूंदर वाली ही है। भाजपा जाएगी तो आएगा कौन ? कांग्रेस, और कांग्रेस के पीछे लेफ्ट। भूलना नहीं होगा कि कांग्रेस अब तक सबसे भ्रष्टतम पार्टी रही है। यूपीए-1 और यूपीए-2 के शासन के दौर में जितने घोटाले हुए, उतने कभी नहीं हुए। लेफ्ट पार्टियां इसी कांग्रेस की सहयोगी थीं। अमेरिका से परमाणु समझौते के सवाल पर जब लेफ्ट ने कांग्रेस को समर्थन देना बंद कर दिया तो भी इससे यूपीए सरकार पर कोई असर नहीं पड़ा। हां, लेफ्ट पार्टियां अवश्य राजनीति के बियाबान में चली गईं। पश्चिम बंगाल में अपनी जनविरोधी नीतियों के कारण, सिंगूर और नंदीग्राम में दमन के कारण उन्हें सत्ता भी गंवानी पड़ी। अब देश की सत्ता संघ के पास चले जाने के कारण कांग्रेस और उसके पुराने विश्वस्त सहयोगी वामदलों को दिन में ही तारे दिख रहे हैं। यही वजह है कि इन्होंने फिर से एक होने की घोषणा कर दी है। कन्हैया को आगे कर के ये देश के युवाओं में अपना प्रभाव बनाना चाहते हैं, लेकिन इन्हें सफलता नहीं मिल पाएगी, यह भी स्पष्ट है। इस देश के वोटर इतने मूर्ख नहीं हैं कि कन्हैया के नाम पर वोट देंगे। ये कांग्रेस और उसकी पिछलग्गू वामपंथियों की महज खामख्याली है।

देश की जनता विकल्पहीनता की समस्या से जूझ रही है। विकल्पहीनता के कारण वोटर कभी इसे तो कभी उसे जिताते रहे हैं। तथा कथित आगे चुनाव में अगर जनता कांग्रेस-लेफ्ट को देश की सत्ता सौंप देती है, तो इससे भी कुछ नहीं होने वाला। तब तक तो संघ जहां तक संभव हो सकेगा, देश को निचोड़ कर धन विदेशों में भेज देगा। दूसरी बात, जब तक ठोस विकल्प नहीं उभरेगा, संघ इतनी आसानी से हार भी नहीं मानेगा। यह बात भूली नहीं जा सकती कि कांग्रेस और लेफ्ट की जनविरोधी नीतियों, लूट, कुप्रशासन और सांप्रदायिक प्रश्नों पर ढुलमुल रवैये के कारण ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को देश की सत्ता पर काबिज होने का मौका मिला। अगर कांग्रेस ने संघ के खिलाफ सही संघर्ष चलाया होता और लेफ्ट पार्टियों ने भी ऐसा किया होता तो संघ सत्ता में आसानी से नहीं आ पाता। लेकिन कांग्रेस देश को लूटने में लगी रही। सांप्रदायिकता के सवाल पर कांग्रेस की नीति हमेशा ढुलमुल रही। यह भी नहीं भूला जा सकता कि इसी कांग्रेस ने इंदिरा गांधी की हत्या के बाद पूरे देश में सिखों का कत्लेआम कराया था। इसलिए कांग्रेस को सेक्युलर नहीं माना जा सकता। सांप्रदायिकता के सवाल पर लेफ्ट की नीति भी ढुलमुल रही है। लेफ्ट ने भी सांप्रदायिकता की जड़ों को समझने की कोशिश नहीं की। इनकी सांप्रदायिकता की समझ बड़ी उथली रही। इनके लिए धर्मनिरपेक्षता 'रघुपतिराघव राजाराम' तक सीमित होकर अल्पसंख्यक तुष्टिकरण भर रह गई। इसका फायदा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने उठाया।

जनता तो एक के बाद किसी दूसरे को मौका देगी ही। पर कांग्रेस अगर इस भुलावे में है कि लेफ्ट के सहयोग से वह फिर केंद्र की सत्ता में आ जाएगी, तो शायद ये संभव नहीं है। उसके पास नेतृत्व का अभाव है। राहुल गांधी फिसड्डी साबित हुए हैं। मोदी (राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ) सरकार जोरदार चाल चलते हुए कांग्रेस शासित राज्यों में विधायकों को खरीद कर अपनी सरकारें बनाने की कोशिश कर रही है और अगर इसमें सफलता नहीं मिल पाती तो फिर वहां राष्ट्रपति शासन लागू कर देती है। संघ का इतिहास साजिशों का इतिहास रहा है। साजिशें रचने में कांग्रेसी इनका मुकाबला नहीं कर सकते। हाल के वर्षों में विचारहीन युवाओं की भारी तादाद वोटरों के रूप में सामने आई है। यह निम्नमध्यवर्गीय युवा संघ का समर्थक है और फासीवाद के प्रति इसका आकर्षण बढ़ रहा है, इस सच को स्वीकार करना होगा। इस युवा वर्ग की वोट की राजनीति में भूमिका बढ़ गई है।

संघ की सत्ता का विकल्प तब बन सकता था जब लेफ्ट पार्टियों के नेता अपनी चुनावी जोड़-तोड़ की नीतियां छोड़ते और अपने एयरकंडीशंड ऑफिसों से बाहर निकल कर सोचते कि उनका उद्देश्य सत्ता-परिवर्तन है या समाज-व्यवस्था में परिवर्तन। लेकिन सत्ता की राजनीति में पूरी तरह रचे-बसे ये नेता ऐसा कभी नहीं सोच सकते। चुनाव जीत कर सत्ता तक पहुंचना ही उनका एकमात्र उद्देश्य है। इसमें उन्हें सफलता नहीं मिलने वाली। आरएसएस ने अपनी जड़ें जमा ली हैं। संघ की सत्ता का जवाब एक बड़ा जनान्दोलन ही हो सकता है, जिसे खड़ा करने में वामदलों की कोई रुचि नहीं है। इसलिए देश का भविष्य क्या होगा, यह अनिश्चित है और ख़तरे में है।

- दिव्यांग

मोदी जी भगवान का तोहफा नहीं भगवान ही हैं.....

ये मैं साबित भी कर सकती हूँ ...आप भी कर सकते हैं ..बहुत आसान है ..बस एक भक्त को पकड़िये उससे ये सब पूछिए और उसके जवाबदेखिये ..ये रहा मेरा वाला सैंपल टेस्ट पेपर .....(.आप लोग भी प्रश्न बनायें और भक्तों लो जी टेस्ट करके डिवाइन शक्ति महसूस करिए .....)

प्रश्न - अरे महंगाई बहुत बढ़ गई है ..ये तो कहते थे ..बहुत हुई महगाई की मार ..अबकी बार .....

भक्त - भई विकास के लिये महगाई का बढ़ना बहुत जरूरी है ..पिज्जा खरीदते वक्त सोचा है 500 का क्यों है पर दाल और सब्जी आपको महगी लगती है ....

प्रश्न - छोटी बचत पर इतना ब्याज कम कर दिया आम आदमी तो इसमें ही इन्वेस्ट करता था।

भक्त - अरे ..इसमें भी एक फायदा है ये आप लोग नहीं समझ सकती .. फिर बाकी के लोन दिए जा सकते हैं।

प्रश्न - इंटरनेशनल लेवल पर तेल के दाम घटे फिर यहाँ उस अनुपात में क्यों नहीं कम हुए ?

भक्त - कितनी बार कम किये गए वो आपको नहीं दीखता निश्चिन्त रहिये मोदी जी देश का नुक्सान नहीं होने देंगे ..समझने की कोशिश करिए आखिर दाम क्यों नहीं कम हुए?..

प्रश्न - रुपया कितना गिर गया जब पहले गिरा था सुषमा जी कहती थी पी एम की गरिमा कम हुई।

भक्त - मनमोहन जी अर्थव्यवस्था इतनी चौपट कर दिए थे इसलिए अभी कुछ दिन गिरा ही रहेगा फिर हम दुनिया में नंबर वन हो जायेंगे

प्रश्न - देश की तमाम यूनीवर्सिटी में पैसा रोका जा रहा स्कॉलरशिप कम की जा रही है इससे बच्चों का भविष्य खराब हो रहा है रोहित ने तो आत्महत्या ही कर लिया है।.

भक्त - जरूरी है ये सब करना वर्ना ये सब बिगड़ रहें है ..सबको मोदी जी देश प्रेम करना सिखा देंगे ऐसे दो -चार गद्दार मर मुर जाएँ तो क्या फर्क पड़ता है देश ज्यादा बड़ा है ...

(खैर आपने देखा भक्त किस कदर आध्यात्मिक मोड में चले गएँ हैं तो जो इंसान सबको इस अलौकिक आनंद की अवस्था में पंहुचा दे कि समस्या में भी उसे जरूर कोई चमत्कार है'' नजर आये ..तो ऐसा व्यक्ति भगवान ही है ....इस डिवाइन अहसास के साथ मैं उन्हें राष्ट्रीय देवता घोषित करने की मांग करती हूँ)।

- अनीता मिश्र